बी. ए. अंतिम वर्ष

मानव विकास

(प्रथम - प्रश्न पत्र)

अध्याय – 1 मानव विकास की धरणा एवं निर्धारक तत्व

मानव विकास की अवधरणा एवं नियम, वृद्धि एवं विकास में अन्तर, विकास का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताएँ, मानव विकास में वंशानुक्रमण और पर्यावरण का तुलनात्मक महत्व, मानव विकास का विषय का क्षेत्र और समस्याएँ।

अध्याय – 2 मानव विकास के सिद्धात :मनोविश्लेषणात्मक और मैसलों एवं अध्ययन प्रणालियां

मानव विकास के सिद्धात प्रफायड का मनोविश्लेषणात्मक या मनो–लैंगिक विकास सिद्धात, मानवतावादी मनोविज्ञानः मैसलो का सिद्धात, अध्ययन प्रणालियाँः समकालीन एवं दीर्घकालीन अध्ययन प्रणालिया।

अध्याय – 3 समाजीकरण

समाजीकरण और सामाजिक सीखना, समाजीकरण और निर्भरता, समाजीकरण और तादात्मीकरण, समाजीकरण की प्रविधियाँ, समाजीकरण के साधन, समाजीकरण के निर्धरक, समाजीकरण के सिद्धांत, समाजीकरण के प्रतिफल, समाजीकरण की अवस्थाएँ, सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले तत्व।

अध्याय – 4 संज्ञानात्मक विकास–पियाजे सिद्धांत

संज्ञानात्मक संरचना या संज्ञानात्मक प्रक्रिया का अर्थ, संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की विशेषताएँ, पियाजे का संज्ञानात्मक विकास।

अध्याय – 5 आत्म और पहचान

उद्देश्य, परिचय, आत्म और आत्म प्रत्यय के पहलू, अन्तःक्रिया में आत्म की उत्पत्ति और विकास, आत्म–उत्पत्ति और विकास के निर्धरक, आत्म विकास के सिद्धात, आत्म की स्थिरता और व्यक्त व्यवहार, आत्म का अन्तः वैयक्तिक सिद्धात, आत्म की स्थिरता के निर्धरण, आत्म–परिवर्तन और व्यक्त व्यवहार।

अध्याय – 6 संवेगों का क्रमागत विकास

संवेग, संवेग की परिभाषाएँ, संवेग की दशाएँ, संवेगों की विशेषताएँ, संवेगात्मक विकास की विशेषताएँ, बालकों के संवेगों का महत्व, बालकों के संवेगों की विशेषताएँ, बालकों तथा प्रौढ़ो के संवेगों में अन्तर, संवेगों का क्रमागत विकास, शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास, बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास, किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास, संवेगों का नियन्त्राण और संवेगात्मक स्थिरता, बालकों के संवेगात्मक व्यवहार को प्रभावित करने वाले तत्व, संवेगात्मक सन्तुलन एवं असन्तुलन, परिपक्वता और अधिगमः अर्थ, महत्व, प्रकार, सामाजिक अधिगमः अनुकरण एवं तादात्मीकरण का विकास पर प्रभाव, शारीरिक और यौन परिपक्वता, विषाद या अवसाद लक्षण, कारण, उपचार।

अध्याय – 7 नैतिकता और आत्म धरणा का विकास

नैतिकता का अर्थ, नैतिक मूल्यों का अर्थ, कोल बर्ग का प्राणीगत विकास या संज्ञानात्मक सिद्धात, नैतिक, चरित्रा एवं धर्मिक विकास को प्रभावित करने वाले तत्व, आत्म प्रत्यक्षीकरण, आत्म प्रत्यक्षीकरण का अर्थ, आत्म प्रत्यय, आत्म प्रत्यय के प्रकार एवं प्रभावित करने वाले कारक, आत्म प्रत्यय का विकास, आत्म प्रत्यय की कुछ विशेषताएँ, आत्म प्रत्यय की संरचना, आत्म प्रत्यक्षीकरण सिद्धांत, आत्म प्रस्तुति, छवि प्रबन्धन, आत्म प्रबन्धन की तकनीकें या रणनीतियाँ, आत्म अनावरणः भय का स्त्राोत और आवश्यकता, आत्म अनावरण में लैंगिक अन्तर, लिंग विकास, शारीरिक रचना और शारीरिक दशा।

अध्याय – 8 मानव विकास में आने वाली आयु समस्याएँ

विकास कार्यो की उत्पत्ति, विकासात्मक क्रियाओं का महत्व, विकासात्मक कार्यो में बाधएँ, विभिन्न अवस्थाओं में विकासात्मक कार्य।

अध्याय – 9 संज्ञानात्मक विकास

बुद्धि का अर्थ एवं स्वरूप, संज्ञान का स्वरूप, तार्किक चिन्तन एवं सक्षमता, संज्ञानात्मक क्षमता का विकास, संज्ञान विकास में सन्निहित प्रक्रियाएँ, संज्ञान विकास की अवस्थाएँ, खेल और संज्ञानात्मक विकास, सृजनात्मक क्षमता का विकास, सृजनशील बालकों की विशेषताएँ, बाल्यावस्था में सृजनशीलता की अभिव्यक्ति, पूर्व प्रौढ़ावस्था में संज्ञानात्मक विकास, मध्य आयु में संज्ञानात्मक विकास, वृद्धवस्था में मानसिक क्षमताओं का ह्रास, प्रतिदिन के संज्ञान– 1. प्रत्यक्षीकरण, प्रत्यक्षीकरण का विश्लेषण, संवेदना व प्रत्यक्षीकरण में अन्तर, प्रत्यक्षीकरण की विशेषताएँ, प्रत्यक्षीकरण का शिक्षा में महत्व, कल्पना, कल्पना का वर्गीकरण, कल्पना की शिक्षा में उपयोगिता, चिन्तन, चिन्तन की विशेषताएँ, चिन्तन के प्रकार, चिन्तन के सोपान, चिन्तन के विकास के उपाय, तर्क, तर्क के सोपान, तर्क के प्रकार, तर्क का प्रशिक्षण, समस्या समाधन, समस्या–समाधन में अन्तर, समस्या समाधन की विधियाँ, समस्या की वैज्ञानिक विधि, समस्या–समाधन विधि का महत्व।

अध्याय – 10 क्रियात्मक विकास

क्रियात्मक विकास का अर्थ, क्रियात्मक विकास की विशेषताएँ या नियम, क्रियात्मक विकास का महत्व एवं सीमाएँ, बचपनावस्था में क्रियात्मक विकास, बाल्यावस्था में क्रियात्मक विकास, शारीरिक कौशलों का विकास हाथ के कौशल पैरों के कौशल क्रियात्मक विकास या शारीरिक कौशलों के निर्धरण, हाथ के प्रयोग की समस्या।

मनोवैज्ञानिक सांख्यिकी

(प्रश्न पत्र - द्वितीय)

इकाई – 1

अध्याय – 1 सांख्यिकी

अध्याय – 2 आवृत्ति वितरण एवं आंकड़ों का ग्रापफीय निरूपण

सांख्यिकी : अर्थ एवं मनोविज्ञान में उपयोगिता, प्राप्तांक की प्रकृति, वर्गीकृत एवं निरंतर चर, आवृत्ति वितरण, आंकड़ों का ग्रापफीय निरूपण।

इकाई – 2

अध्याय – 3 केन्द्रीय प्रवृत्ति तथा विचलनशीलता के माप

केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप : मध्यमान, मध्यांक एवं बहुलांक समूहीकृत एवं असमूहीकृत आंकड़े, विचलन शीलता की मापः प्रसार, मानकविचलन, चतुर्थांश विचलन, औसत विचलन केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप एवं विचलनशीलता के अनुप्रयोग।

इकाई – 3

अध्याय – 4 सामान्य साम्भाव्यता वक्र

अध्याय – 5 सहसम्बन्ध

सामान्य सम्भाव्यता वक्र की प्रकृति एवं विशेषताएं : विषमता एवं कुकुदता, सहसंबंध : संकल्पना, प्रकार एवं विधियाँ – कोटिय सहसंबंध प्रोडक्ट मूवमेंट ;असमूहीकृत आंकड़ेद्ध, द्विपांतिक एवं चतुष्कोटिय गुणांक।

इकाई – 4

अध्याय – 6 आनुमानिक सांख्यिकी

आनुमानिक सांख्यिकी : शून्य परिकल्पना की संकल्पना, सार्थकता के स्तर, टाईप–I प्रकार, टाईप–II प्रकार की त्रुटि, टी–परीक्षण ;असंबंधित आंकड़ेद्ध।

इकाई – 5

अध्याय – 7 काई वर्ग परीक्षण

वितरण मुक्त सांख्यिकी : काई–वर्ग, मध्यांक एवं चिन्ह परीक्षण, मनोवैज्ञानिक सांख्यिकी में कम्प्यूटर की उपयोगिता।